drishti | दृष्टि The Vision

# हिन्दी साहित्य

## टेस्ट-10

(प्रश्न पत्र-II)

515

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

**DTVF OPT-24 HL-2410**

| निर्धारित समय: तीन घंटे<br>*Time Allowed: Three Hours* | *अधिकतम अंक : 250*<br>*Maximum Marks : 250* |
|---|---|

नाम (Name): आनंद कुमार मीना

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): HL - Test - 10

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

| 0 | 8 | 2 | 5 | 6 | 6 | 3 |
|---|---|---|---|---|---|---|

---

## *Question Paper Specific Instructions*

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

---

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
*Evaluator (Code & Signatures)*



पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
*Reviewer (Code & Signatures)*

drishti | दृष्टि The Vision

# Feedback

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

drishti | दृष्टि The Vision

## खण्ड - क

1. **निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:** $10 \times 5 = 50$

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(क) हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन बच क्रम नँदनंदन सों उर यह दृढ़ करि पकरी।।
जागत, सोवत, सपने सौंतुख कान्ह कान्ह जक री।
सुनतहि जोग लगत ऐसो अलि! ज्यों करुई ककरी।।
सोई व्याधि हमैं लै आए देखी सुनी न करी।
यह तो सूर तिन्हैं लै दीजै जिनके मन चकरी।।

**संदर्भ एवं प्रसंग**

व्याख्येय पंक्तियाँ आचार्य शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत हैं जिनकी रचना कृष्णभक्त कवि सूरदास द्वारा की गई है। इन पंक्तियों में गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रति अपने भावों की अभिव्यक्ति कर रही हैं।

**भावार्थ एवं विशेषार्थ**

गोपियाँ कहती हैं कि हमारे कृष्ण का हारिल की लड़ी लकड़ी के समान है जो किसी भी कारण से दूर नहीं हो सकती। यह विरह हमें ककड़ी ककड़ी के समान लगता है। कृष्ण के विरह में हमारा मन चकरी की तरह घूमता ही रहता है।

यही भाव एक अन्य पद

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

में भी देखा जा सकता है -

" अब कैसेहूँ निकसत नहीं ऊधो,
तिरछे हैं ज्यूँ अड़े "

**काव्यगत वैशिष्ट्य**

1. ब्रजभाषा का माधुर्यपन झलक रहा है
2. गोपियों की वाणी में वक्रता ध्वनित हो रही है
3. रूपक की योजना
4. अलंकार
   अनुप्रास - हमारे हरि ——
   उत्प्रेक्षा -> ज्यों करुई ——
   उपमा -> मन चकरी ——
5. सूर काव्य की सहृदयता व भावुकता दृष्टिगोचर हो रही है

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति; और मुकति अति हानि।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

**संदर्भ एवं प्रसंग**

बिहारी का काव्य समाहार क्षमता के लिए प्रसिद्ध है। जगन्नाथ दास रत्नाकर द्वारा संकलित 'बिहारी रत्नाकर' से उद्धृत काव्यांश में यही समाहार क्षमता परिलक्षित हो रही है।

**भावार्थ एवं विशेषार्थ**

बिहारी की कुशलता इस बात में है कि वे एक ही छंद 'दोहा' में अनेक अनुभावों को प्रस्तुत करते हैं। इस दोहा में भी वह चेहरे की चमक, गुस्से के भाव, हँसी, सिसकी की पीड़ा आदि भावों से संपृक्त मधुरा नायिका का वर्णन कर रहे हैं।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

## काव्यगत वैशिष्ट्य

1. रीतिकालीन काव्य की इसी शौल्पिक कुशलता ने ब्रज भाषा को अखिल भारतीय भाषा का दर्जा दिलवाया है।

2. रीतिकालीन मानसिकता का भाव झलक रहा है।

3. अलंकार –
अनुप्रास – चमक, तमक, हाँसी ——— 'क' की पुनरावृत्ति

4. रूपक की योजना भी दिखती है।

~~5. लोकमंगल का काव्य~~

5. इसी भाव के कारण कहा गया है –

"सतसैया के दोहरे ज्यों नावके के तीर,
देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर।।"

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा।।
तरिवर झरहि झरहि बन ढाखा। भइ ओनंत फूलि फरि साखा।।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। सो कहँ भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।।
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत-मरत मोहि रोष न आवा।।
राति-दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।
यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

**संदर्भ एवं प्रसंग**

जायसी ने सूफी प्रेमाख्यान के भावों को भारतीय कथा के सहारे अभिव्यक्त किया है। उनकी ही रचना 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खंड' से उद्धृत इन काव्य पंक्तियों में भी बारहमासा एवं विरहदशा चित्रण के माध्यम से विरहदग्ध नारी की पीड़ा को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

**भावार्थ एवं विशेषार्थ**

रत्नसेन के विरह में पीड़ित नागमती के लिए फागुन का महिना और भी दूभर हो गया है। उसका मन झरते पत्तों के समान दुखी है जबकि उसकी

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सहेलियाँ फाग में चाँचरि का आनंद ले रही है। वह विरह के इस स्तर पर आ गई है कि वह अपना तन जला कर उसकी मुलायम राख को पति के मार्ग में बिछाना चाहती है।

**काव्यगत वैशिष्ट्य**

1. षट्ऋतु वर्णन की काव्यरूढ़ि का प्रयोग विरह की गंभीरता को दिखाने के लिए।
2. सूर की गोपियाँ भी इसी तरह कृष्ण विरह से दग्ध हैं।
3. चाँचरी जैसे लोक-संस्कृति के तत्व ही जायसी की अवधी में मिठास भरते है।
4. कड़वकबद्ध शैली (7 चौपाई व दोहे का क्रम)
5. रूपक की योजना
6. संश्लिष्ट बिंब – दृश्य एवं स्पर्श बिंब
7. फारसी प्रभाव में ऊहात्मकता का प्रवेश।

drishti | दृष्टि The Vision

(घ) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

**संदर्भ एवं प्रसंग**

निराला ने ~~समसामयिक~~ 'राम की शक्तिपूजा' (1936) में अपने वैयक्तिक संघर्ष और युगीन चिंताओं को अभिव्यक्ति दी है। इसी काव्य से उद्धृत व्याख्येय पंक्तियों में राम के हताश व निराश मन को शारीरिक लक्षणों के माध्यम से दिखाया है।

**भावार्थ एवं वैशिष्ट्य**

रावण से मिलती बारंबार हार से निराश राम जब शिविर में लौटते हैं तो उनका कटिबंध ढीला पड़ जाता है उनकी जटाएँ कंधों पर ~~इ~~ फैली हैं प्रकारांतर से यह उनके मन पर छाये अँधकार को दर्शा रही है यहाँ पर

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

चमकती हुए तारांए सफलता से दूरी को दिखा रही हैं जो कि कभी-कभी दृष्टि से ओझल हो जाती है।
प्रतीकात्मक रूप में यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मिल रही असफलता व गाँधी जी की निराशा का प्रतीक है।

**काव्यगत वैशिष्ट्य**

1. निराला की आभिजात्य भाषा क्षमता के कारण तत्सम बाहुल्य संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग हुआ है।
2. छायावादी लाक्षणिकता, निराला की कल्पनाशीलता एवं नाटकीयता का समावेश हुआ है।
3. रूपक की योजना (दुर्गम पर्वत पर—)
4. 'उतरा ज्यों दुर्गम' में उत्प्रेक्षा अलंकार
5. 'शक्ति छंद' (24 मात्राएँ)
6. निराला ने राम को असाधारण से साधारण बना मध्यवर्गीय आमजन के मनोभाव की अभिव्यक्ति की है

drishti | दृष्टि The Vision

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

## संदर्भ एवं प्रसंग

उद्धेय के 'असाध्य वीणा' में सर्जना की अर्हता, प्रक्रिया एवं प्रभाव का विश्लेषण जापानी लोककथा का भारतीयकरण कर के किया है। व्याख्येय पंक्तियों में उसी 'सर्जना की अर्हता' का विश्लेषण किया गया है।

## भावार्थ एवं वैशिष्ट्य

वीणा को न साध पाने पर राजा निराश है लेकिन आशाहीन नहीं है। राजा का विश्वास है कि वज्रकीर्ति की वीणा निर्माण की तपस्या व्यर्थ नहीं जाएगी। यह वीणा तब

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अनासक्ति जब कोई अर्हत व्यक्ति अपने स्वत्व का विलयन कर उसे साधेगा।

काव्यगत वैशिष्ट्य

1. इन पंक्तियों में जो 'असफलता' का भाव है वही ब्रह्मराक्षस (मुक्तिबोध) का भी है

2 राजा के समान 'शक्तिपूजा' के राम भी थके नहीं है—

"वह एक मन रहा राम ———— ।"

3. पद्धरि छंद

4. तत्सम बाहुल्य संस्कृतनिष्ठ भाषा

5. 'सन्ध्या स्नेह सिक्त' में अनुप्रास अलंकार

6. रूपक की योजना (सन्ध्या स्नेह— )

7. बौद्ध धर्म के जेनवाद का प्रभाव दिखता है।

वर्तमान में भी वास्तविक कला के सृजन हेतु आत्मसमर्पण करना ही पड़ता है। उदाहरणतः विराट कोहली द्वारा कठिन परिश्रम।

drishti | दृष्टि The Vision

2. (क) 'सूरसागर में वर्णित गोपियों का विरह खाली बैठे का काम-सा दिखायी पड़ता है।' इस मत के पक्ष या विपक्ष में अपना तार्किक मत प्रस्तुत कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कृष्णभक्त कवि सूरदास ने वात्सल्य वर्णन, विरह वर्णन, उपालंभ काव्य के साथ सूरसागर में कई मौलिक उद्भावनाएं प्रस्तुत की हैं। लेकिन, सूरसागर में वर्णित विरह ~~समीक्षकों~~ के स्वरूप को लेकर समीक्षकों में पर्याप्त असहमति रही है।

जहाँ आचार्य शुक्ल जैसे महान समीक्षक मानते हैं कि सूर की गोपियों का विरह तुलसी की सीता के विरह के समान उच्च आदर्श के धरातल पर नहीं पहुँच पाता है।

सामान्य दृष्टि से देखने पर यह आक्षेप उचित भी लगता है। उदाहरण: गोपियाँ कृष्ण के पत्र

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

को प्राप्त करते ही अतिभावुक हो जाती हैं जैसे-

"निरखत अंक श्याम सुंदर के,
बार-बार लावती छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलकै
ह्वै गई श्याम श्याम की पाती।"

साथ ही वे सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास कर कुब्जा पर उपालंभ करती हैं-

'कुब्जा को पटरानी कीनो,
मोहिं देत बैराग।"

लेकिन डॉ. मैनेजर पांडेय, हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे समीक्षक गोपियों के विरह में भी भावुकता व उच्च आदर्श देखते हैं सूक्ष्म दृष्टि से देखने

drishti | दृष्टि The Vision

पर यह मत भी उचित लगता है
गोपियों का विरह एकनिष्ठ न होकर
सामाजिकता का भाव लिए हुए है
यहाँ तक कि उनके विरह में प्रकृति
भी शामिल है -

"मधुबन तुम कहत रहत हरे
विरह वियोग श्याम सुंदर के ठाढ़े क्यों न जरे,
तुम हो निलज, लाज नहीं तुमको फिरि
सिरि पुहुप धरे।"

इसी प्रकार गोपियों
के विरह में राधा भी शामिल है
जिसका माधुर्य उच्च कोटि का है
उदाहरणत:

"अति मलिन वृषभानु कुमारी
हरि श्रमजल अंतर तन भीजे ता लालच
न धुआवति सारी"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जायसी की पद्मावत में भी नागमती का विरह इसी तरह भावुकता एवं सहृदयता लिए है। वहाँ भी प्रकृति विरह में शामिल है यथा–

"पिउ सों कहेउ संदेसड़ा, हे भौंरा हे काग,
जरी विरह मुई तिहि धुँआ हमहिं लाग।"

अतः यह कहा जा सकता है कि तुलसी के रामचरितमानस में सीता को राम से विरह जिस उच्च आदर्श के धरातल को छूता है उस स्तर पर भ्रमरगीत सार की गोपियाँ नहीं पहुँच पाई हैं। लेकिन उसके बावजूद गोपियों का यह विरह सूरदास की काव्य क्षमता का अनूठा प्रमाण है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कविता को रीतिवादी मनोरंजन से मुक्त कर सामाजिक दायित्व से युक्त करना चाहते थे। क्या मैथिलीशरण गुप्त की काव्य कृति 'भारत-भारती' द्विवेदीजी की इस मंशा को पूरी करती है? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

महावीर प्रसाद द्विवेदी भाषायी शुद्धता के साथ-साथ कविता की मनोरंजनइतर उपयोगिता के समर्थक थे। भारतेंदु काल में रीतिकालीन मनोरंजनकारी भाव में कमी जरूर आ गई थी लेकिन इस प्रवृत्ति का अंत मैथिलीशरण गुप्त की भारत-भारती से ही हुआ।

गुप्त जी ने सर्वप्रथम संवेदना के स्तर पर 'भारत-भारती' के द्वारा नवजागरण का काव्य रच कर काव्य के मनोरंजनकारी उद्देश्य पर चोट की।

यहाँ तक कि उन्होंने खुद लिखा है कि —

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए"

इसी तरह रीतिकालीन वासनागत सौंदर्य की जगह नारी के उच्च आदर्शों को सीता, अहिल्या से लेकर वैदिक काल में अपाला, घोषा जैसे विदुषियों के माध्यम से प्रस्तुत कर नए नारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

गुप्त जी ने 'भारत-भारती' के द्वारा सो रहे बुद्धिजीवी वर्ग को जगा कर स्वतंत्रता के उच्च मूल्य से साक्षात्कार करवाया।

रीतिकालीन काव्य जहाँ प्रशंसा, पुरस्कार के उद्देश्य से लिखे जाते थे वहीं 'भारत-भारती' तत्युगीन

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भारतीयों के समक्ष - "हम क्या थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी" का प्रश्न खड़ा कर रही थी।

साथ ही शिल्प के स्तर पर भी गुप्त जी ने एकतरफ तो संपूर्ण भारत के लिए एक भाषा का आदर्श रखा - देश की भाषा भी न कोई एक है

वहीं खड़ी बोली के ब्रज भाषा की जगह विकल्प रूप में प्रस्तुत किया। 'भारत-भारती' ने भाषायी द्वैत की समस्या का समाधान भी प्रस्तुत किया।

कहना न होगा कि 'भारत-भारती' ने एक झटके में भारतीय काव्य परंपरा की दिशा बदल दी।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'सूर के पास उपमाओं का अक्षय कोष है। वे उपमाओं का संसार रचकर कथा की छोटी और क्षीण-सी जमीन को गहरी बनाते चले जाते हैं।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सूर अंधे थे लेकिन यह अक्षमता उन्हें अवर्चीन उपमाओं के निर्माण से रोक नहीं पाई। 'भ्रमरगीत' ~~सार~~ में तो उन्होंने उपमा के नए प्रतिमान गढ़े हैं।

सूर ने केवल 'ऊधो-गोपीयों के संवाद को अपने काव्य का हिस्सा बनाया है लेकिन इस छोटि-सी कथा में उन्होंने उपमाओं के द्वारा नया संसार रच दिया है।

इन उपमाओं का प्रमाण गोपियों की वक्रतापूर्ण वाणी में देखा जा सकता है। जैसे "हमारे हरि हारिल की लकड़ी"

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

साथ ही उन्होंने मथुरा जैसे नगर को एक कोठरी के रूप में प्रस्तुत किया है -

"यह मथुरा काजर की कोठरी, जे आवहिं ते कारे।
तुम कारे सुफलकसुत कारे, कारे भँवर निसारे।"

लेकिन आचार्य शुक्ल ने सूरदास की उपमा प्रयोग की अतिशयता पर आक्षेप किए हैं। वे लिखते हैं-

सूर पर एक सनक-सी छा जाती है और वे उत्प्रेक्षा पर उत्प्रेक्षा, उपमा पर उपमा करते चले जाते हैं।

साथ ही सूर ने कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण उपमा भी कर

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

डाली है जिसके कारण काव्य में अरोचकता आ जाती है। जैसे मक्खन लगी रोटी की तुलना पृथ्वी से की है।

"जैसे बारह भूधर की कोटि।"

इसी प्रकार एक ही उपमा का बार-बार प्रयोग।

जैसे उड़े जहाज को पंछी फिर जहाज पे आवै।"

इन सभी आलोचनाओं के बावजूद सूर की काव्य कला में उपमा अलंकार की कुशलता विशिष्ट है। आचार्य द्विवेदी ने कहा है—

"अलंकारशास्त्र सूर के पीछे-पीछे दौड़ता है।"

3. (क) पदमावत में लोकसंस्कृति और लोकतत्त्वों के प्रति जायसी की गहरी रुचि व्यक्त होती दिखायी देती है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) सूरदास के 'भ्रमरगीत' के काव्यरूप का निर्धारण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) क्या गोस्वामी तुलसीदास लोकनायकत्व की कसौटी पर खरे उतरते हैं? सुचिंतित और सारगर्भित उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

4. (क) कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कबीर समाज सुधारक, भक्त, रहस्यवादी चिंतक, और कवि इत्यादि भूमिकाओं में कुशलता से निभाते हैं। उनका काव्य इन सभी रूपों में आज भी प्रासंगिकता धारण किए हुए है।

**समाज सुधारक**

① धार्मिक आडंबर पर चोट करता यह दोहा 'पाहन पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूँ पहाड़'

आज भी प्रासंगिक है। संविधान के अनुच्छेद 51A में जिस वैज्ञानिक मानसिकता की बात की है वह कबीर के काव्य में दिखता है।

② जाति प्रथा की विद्रूपता पर प्रश्न खड़े

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

करते हैं:—

'जो बांभन-बांभनी का जाया
आन बाट काहे नहीं आया।"

आज भी जातिप्रथा के कारण अनेक युवक-युवतियाँ 'ऑनर किलिंग' का शिकार हो जाते हैं।

3) वाणी की मधुरता पर बल। जो कि सोशल मीडिया से उपजी अनामिता के दौर में बहुत जरूरी है।

ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे खुद भी शीतल होय।

4) ~~कबीर~~ वर्तमान के जिस 'Life मिशन' की बात हमारे प्रधानमंत्री महोदय प्रोत्साहित कर रहे हैं उसका उत्स कबीर काव्य ही है—

"साईं इतना दीजिए जामे कुटुंब समाय"

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5) समाज व देश हेतु आत्मसमर्पण का भाव कबीर के काव्य में भी दिखता है—

हम घर जारा आपना लिया मुराड़ा हाथ,
अब घर जारौं तासु का जो चले हमारे साथ।

6) विवाहेत्तर संबंधों के दौर में कबीर पतिव्रता का आदर्श प्रस्तुत अपने काव्य द्वारा करते हैं—

पतिव्रता मैली भली काली कुचित कुरूप
पतिव्रता के रूप पर वारौं कोटि सरूप।

7) सद्गुरु का महत्त्व — "आगे बढ़ा जाई था ________।"

भक्त

कबीर राम-नाम सुमिरन के द्वारा मोक्ष का मार्ग बतलाते हैं। आज के दौर में बढ़ते संप्रदायों (Cults) के संदर्भ में इसे समझा जा सकता है और सुमिरन को महत्त्व देते

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

है —

'कबीर सुमिरन सार है-
और सकल जंजाल।"

**रहस्यवादी चिंतक**

साधनात्मक रहस्यवाद का पाठ योगमार्ग को प्रोत्साहित करता है जो कि बढ़ती आत्महत्याओं के दौर में अनुकरणीय है।

" अवधू गगनमंडल घर कीजै ——।"

**प्रेम का महत्व**

"कबीर यह घर प्रेम का खाला का घर-

इस प्रकार कबीर 'करि- कुंजर एक', 'कस्तूरी अंदर बसै' जैसे काव्य से वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर प्रासंगिक बने हुए हैं।

(ख) "मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।' विवेचन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मुक्तिबोध यथार्थवादी कवि हैं और यथार्थ के मूर्तन के लिए वे फैंटेसी का सहारा लेते हैं। ब्रह्मराक्षस में फैंटेसी के सहारे बुद्धिजीवी वर्ग का आत्मसंघर्ष ही अभिव्यक्त हुआ है।

ब्रह्मराक्षस उस मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का प्रतिक है जो अपने ज्ञान से और लोगों से प्रदान न करने के कारण अपराध-बोध से ग्रसित है। इस अपराध-बोध से मुक्ति का वह बारंबार प्रयास करता है पर असफल होता है।

"धो रहा
हाथ, मुँह छाती, छपा छप
फिर भी मैल, फिर भी मैल।"

यह अपराध-बोध आत्मचेतन के विश्वचेतस न बन पाने की व्यथा का परिणाम है।

"आत्मचेतन—
विश्वचेतस बे-बनाव ———।"

विश्वचेतस न बन पाने का कारण है कि मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी जीवन की सार्थकता से विच्छिन्न होकर निरर्थक जीवन जी रहा है। बावड़ी उसका ही प्रतीक है—

"शहर के उस ओर
परित्यक्त सूनी बावड़ी।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बावड़ी के किनारे टगर का पेड़ व उस पर लटके घुघुओं के घोसले भी मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की निष्क्रियता का परिणाम है।

'कुरुक्षेत्र' में युधिष्ठिर की समस्या के समाधान हेतु 'भीष्म पितामह' मौजूद है लेकिन यहाँ मुक्तिबोध निर्वैयक्तिवाद का अतिक्रमण कर इस बुद्धिजीवी वर्ग को आत्मसंघर्ष से मुक्ति हेतु 'सजल-उर शिष्य' बनकर हस्तक्षेप करते हैं।

कहना न होगा मुक्तिबोध दरअसल में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष के माध्यम से आजादी के बाद के भारत के लोगों का आत्मसंघर्ष ही प्रस्तुत किया है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) जिंदगी का अभाव और संघर्ष ही नागार्जुन के काव्य-संसार की जलवायु है और विक्षोभ उनकी कविता का केंद्रीय स्वर।' इस कथन के आलोक में नागार्जुन के काव्य-कर्म पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नागार्जुन जनकवि है और उनकी प्रतिबद्धता विचारधारा के प्रति न होकर जनता के प्रति है। इसी प्रतिबद्धता (जनकवि हूँ साफ कहूँगा) के कारण नागार्जुन आमजन की जिंदगी के अभाव को अपने काव्य में जगह देते हैं।

एक तरफ 'अकाल और उसके बाद' में वे मानव के साथ सभी प्राणियों के जीवन संघर्ष को ~~अस्त~~ अभिव्यक्ति देते हैं-

बहुत दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
बहुत दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

वहीं दूसरी ओर 'हरिजन गाथा' को विलाप शैली में लिखकर उन्होंने आमजन के विक्षोभ को उभारा है जहाँ -

"एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं,
तेरह के तेरह अभागे
जिंदा अग्नि में झोंक दिए गए हों"।

दलित समुदाय के लिए जिंदगी जीने से ज्यादा बचाने के प्रश्न महत्वपूर्ण था। यही भाव नागार्जुन की कविता में दिखता है।

कवि दिनकर ने कहा है कि - 'मत उन्हें दर्शन दो जिनको भूख लगी है"। अतः नागार्जुन भूखों

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

है ~~जिंदगी~~ ज़िंदगी है असली अभाव अन्न को ही ब्रह्म मानते हैं।

"अन्न ही अन्न ब्रह्म है और ब्रह्म पिशाच।"

लेकिन नागार्जुन को किसी एक विचारधारा, वर्ग, दृष्टिकोण में बाँधना असंभव है अतः 'बादल को घिरते देखा है' जैसे काव्य में उनकी दृष्टि नैसर्गिक सौंदर्य को भी तलाशती है।

फिर भी कहना न होगा कि नागार्जुन के काव्य का केंद्रीय तत्व ज़िंदगी का अभाव है ~~व~~ यही तत्व उन्हें रचनाकर्म की सार्थकता प्रदान करता है।

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - ख

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दु:ख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

**संदर्भ एवं प्रसंग**

प्रेमचंद ने 'गोदान' (1936 ई.) में यथार्थवाद का नव चित्रण तो किया है लेकिन उनके बीच मेहता-मालती के संवाद द्वारा जीवन हेतु नए आदर्श भी प्रस्तुत किए हैं। व्याख्येय पंक्तियाँ इसी का प्रमाण हैं।

**भावार्थ**

मिस मालती मिस्टर मेहता से स्त्री-पुरुष संबंधों में विवाह की अनुपयोगिता की बात कह रही हैं। उनके अनुसार स्त्री-पुरुष का संबंध विवाह द्वारा

drishti | दृष्टि The Vision

संकुचित कर दिया जाता है। अतः बिना विवाह किए स्त्री-पुरुष आत्मोन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विशेष →

(1) मार्क्सवादी विवाह दृष्टिकोण का प्रभाव दिखता है जो विवाह को बंधनकारी मानता है।

(2) यही भाव 'हर्षदगुप्त' (प्रसाद) की देवसेना के अंतिम वाक्य में दिखता है।

(3) सहज, सरल भाषा।

(4) 'पैरों में बेड़ियाँ डालना' मुहावरे का प्रयोग।

(5) आदर्श प्रेम का भाव जो शारीरिक वासना के इतर है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) जो तुमसे भय करता है, उससे तुम भी भय करते हो। शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागरित। भय का कारण होने से भय अवश्य होगा। निर्भय वही है, जो भय के कारणों से मुक्त है। तुम्हारी शक्ति से यदि दूसरा भयभीत है तो उसका भयभीत रहना तुम्हारे भय का गुप्त बीज है। अनुकूल भूमि और ऋतु पाने से भय का यह बीज किसी भी समय अंकुरित हो सकता है। आर्य, ऐसी अवस्था में शक्ति अभय का नहीं, भय का ही कारण है। अन्य के भय का और अपने भय का भी।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

**संदर्भ एवं प्रसंग**

व्याख्येय गद्यांश प्रसाद के नाटक 'स्कंदगुप्त' से लिया गया है। इन पंक्तियों में 'भय के निहितार्थ' स्पष्ट किए गए हैं।

**व्याख्या**

स्कंदगुप्त द्वारा शक्ति को निरर्थक बताने पर उसके कहा जाता है कि शक्ति वास्तव में भय का कारण भी है और भय की जननी भी।

**विशेष**

1) निरंकुश सत्ताओं में भय दिखाकर आमजन को दबा दिया जाता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

लेकिन इस भय के बीज का अंकुरण एक दिन विशाल वृक्ष बन फूट पड़ता है।

② उत्तरी कोरिया में भी यही स्थिति है।

③ 'मैरी कॉम' फिल्म में भी डायलॉग है— किसी को इतना भी मत डराओ की डर ही निकल जाए।

④ तत्सम मुक्त खड़ी बोली।

⑤ भाषा में लयात्मकता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

**संदर्भ एवं प्रसंग**

व्याख्येय पंक्तियाँ निर्मल वर्मा की कहानी 'परिंदे' से उद्धृत हैं। इस कहानी का संकलन 'एक दुनिया समानांतर' में राजेंद्र यादव द्वारा किया गया है। ये पंक्तियाँ बर्मा से आए मि० मुकर्जी द्वारा ह्यूबर्ट द्वारा कही गई हैं।

**व्याख्या**

इन पंक्तियों में शहरी मध्यमवर्गीय समूह में मृत्यु को लेकर विपरीत भावों की अभिव्यक्ति हुए है। मि० ह्यूबर्ट पत्नी की मृत्यु के बाद से अकेले हैं तो उन्हें मृत्यु से डर

drishti | दृष्टि The Vision

नहीं लगता। यह बात मोह या लगाव की अनुपस्थिति से जन्मी बेफ़िक्री का भाव प्रस्तुत करती है।

विशेष

① 'नई कहानी' की विशेषताएँ दिखाती है जिसमें शहरी मध्यवर्गीय जीवन का निरर्थकताबोध, पहचान का संकट जैसे तत्व उभरते हैं।
② प्रतीकात्मक भाषा। कोई पीछे नहीं है यह अकेलेपन का प्रतीक है।
③ भाषायी स्वच्छंदता – 'ट्रैजिक' अंग्रेजी शब्द का सहज प्रयोग
④ जीवन व मृत्यु का दर्शन प्रस्तुत हुआ है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(घ) प्रच्छन्नता का उद्घाटन कवि-कर्म का एक मुख्य अंग है। ज्यों-ज्यों सभ्यता बढ़ती जाएगी त्यों-त्यों कवियों के लिये यह काम बढ़ता जाएगा। मनुष्य के हृदय की वृत्तियों से सीधा संबंध रखने वाले रूपों और व्यापारों को प्रत्यक्ष करने के लिये उसे बहुत से पदों से हटाना पड़ेगा। इससे यह स्पष्ट है कि ज्यों-ज्यों हमारी वृत्तियों पर सभ्यता के नए-नए आवरण चढ़ते जाएंगे त्यों-त्यों एक ओर तो कविता की आवश्यकता बढ़ती जाएगी, दूसरी ओर कविकर्म कठिन होता जाएगा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

**संदर्भ एवं प्रसंग**

आचार्य शुक्ल ने अपने निबंध 'कविता क्या है' में कवि-कर्म के नए आदर्श एवं नियम निश्चित किए हैं। 'चिंतामणि' (1939) में संकलित इन व्याख्येय पंक्तियों में भी कवि की महत्ता को उद्घाटित किया गया है।

**व्याख्या**

बढ़ते समय के साथ मानव की मूल वृत्तियों पर विचारधाराओं के नए-नए आवरण पड़ते लगेंगे तो कवि का कार्य और भी

महत्वपूर्ण हो जाएगा। लेकिन, मनुष्य के इन विचारधाराओं एवं सांस्कृतिक छद्म बेड़ियों से बाहर निकलने का कार्य आसान नहीं है।

**विशेष**

① तत्समयुक्त खड़ी बोली

② लेखन में वस्तुनिष्ठता दिखती है।

③

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ङ) राजनीति साहित्य नहीं हैं। उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ, तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

## संदर्भ एवं प्रसंग

व्याख्येय पंक्तियाँ मन्नू भंडारी के उपन्यास 'महाभोज' (1979) से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में दा साहब राजनीति ~~का महत्व समझ~~ में वक्त का महत्व समझा रहे हैं।

## व्याख्या

मैकियावली को 'रियल पॉलीटिक' के समान इन पंक्तियों में राजनीति को यथार्थ माना गया है। राजनीति में किसी भी कदम की 'टायमिंग' बहुत महत्व रखती है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विशेष

1) स्कंदगुप्त में मातृगुप्त कहता है –
"राजनीति कल्पना का लोक नहीं है"

(2) दा साहब की विद्वता का प्रमाण यह वाक्य है

(3) वर्तमान में भी दल-बदल व पार्टी तोड़ने में की राजनीति में 'धन' का महत्व है

drishti | दृष्टि The Vision

6. (क) 'प्रेमचंद के कथा-साहित्य में उनका वर्तमान भी बोलता हुआ दिखायी देता है और भविष्य भी।' इस कथन के संदर्भ में अपना तार्किक मत रखिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रेमचंद न तो अतीत का गौरवगान करते हैं न ही चमचमाते भविष्य की कल्पना। वे बेलौस होकर वर्तमान की समस्याओं का समाधान करते हैं।

प्रेमचंद ने इसी यथार्थ वर्णन में वर्तमान को भी अभिव्यक्त किया है और भविष्य हेतु कुछ बीज भी मिट्टी में दबा दिये हैं।

**प्रेमचंद के साहित्य में वर्तमान**

① चलते सामंतवाद व उभरते पूँजीवाद को उन्होंने 'गोदान' में दिखाया है।

drishti | दृष्टि The Vision

"लगता है हमारे वर्ग की हस्ती जल्द ही मिटने वाली है।"
— रायसाहब

(2) किसानों की दरिद्रता, ऋणग्रस्तता, भूखमरी को हल्कू, होरी जैसे पात्रों एवं 'पूस की रात' जैसी कहानियों में उभारा है।

(3) धार्मिक व्यवस्था में होते शोषण को उन्होंने 'सवा सेर गेहूँ' जैसी कहानी में उभारा है। गोदान में होरी भी दातादीन जैसे धर्म के ठेकेदारों के चुंगल में फँस कर जान दे देता है।

(4) वैश्याओं, विधवाओं (बूढ़ी काकी), (रंगभूमि) एवं वृद्धों की समस्या

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

को भी प्रेमचंद ने पर्याप्त रूप से दिखाया है-

बुढ़ापा अक्सर बचपन का पुनरागमन होता है

(5) प्रेमचंद के साहित्य में हामिद जैसे अनाथ जिम्मेदारियों के बोझ से क्षण भर में बड़े हो जाते हैं।

(6) तत्युगीन समाज में दलितों की स्थिति को 'सद्गति', 'कफन', 'दूध का दाम' जैसी कहानियों व सिलिया (गोदान) जैसे पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है

(7) 'Unpaid Domestic work' का मुद्दा गोदान में

भविष्य

(1) 'गिला' कहानी में दहेज, बाल-विवाह जैसी समस्या का समाधान

drishti | दृष्टि The Vision

शिक्षा सुविधाओं में ढूँढ़ता है।

② 'गोबर' जैसे पात्र नई जनरेशन का प्रतिनिधित्व है जो मानती है- पैसा हो तो हुक्का-पानी कोई नहीं पूछता।

③ ओंकारनाथ जैसे पात्र (गोदान) उभरती पत्रकारिता पर प्रश्न खड़े करते हैं तो मिर्जा खुर्शेद के कथन राजनीतिक लोकतंत्र पर प्रश्न खड़े करते हैं।

कहना न होगा कि प्रेमचंद का अपनी इन्हीं के कारण वर्तमान ही नहीं भविष्य में भी प्रासंगिकता लिए रहेगा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) गोदान के मेहता–मालती संवाद से उभरने वाली वैचारिकता की प्रस्तुति कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'महाभोज' में समकालीन दलगत राजनीति का जन-विरोधी चरित्र विश्वसनीय तरीके से उभारा गया है- इस कथन का परीक्षण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मन्नू भंडारी महाभोज में राजनीतिक विद्रूपताओं को उभारती है।

दलगत राजनीति

(1) राव, चौधरी द्वारा मंत्री पद मिलने पर लोचन बाबू का साथ न देना। ऐसा ही अब वर्तमान में भी देखा जा सकता है।

(2) सुकुल बाबू जैसे लोग अपने दल को बढ़ाने हेतु बीसू की

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मौत का अवसर मिलते ही अपना सन्यास तोड़ देते हैं।

## राजनीति का जन-विरोधी चरित्र

① अंसारी जैसे अपराधी को दा साहब जैसे बड़े नेता का समर्थन राजनीति के अपराधीकरण हेतु जिम्मेदार है।

② वंचित वर्ग मात्र वोट बैंक बनकर रह गया है। बाबू की मौत को हर राजनीतिक वर्ग भुनाना चाहता है न्याय की बात कोई नहीं करता।

③ राजनेताओं की साथ डी आई जी

सिन्धु जैसे लोग दे रहे हैं

(4) चुनाव आते ही जोरावर के गुंडों द्वारा गश्त बढ़ाना लोकतंत्र का मखौल है

(5) यहाँ तक कि बापू की मौत के लिए उसके दोस्त बिंदा को ही जेल में डाल दिया जाता है

लेकिन मन्नू भंडारी खतरनाक लपकती ~~अग्निलीक~~ अग्निलीक का भिस्सर सक्सेना में प्रवेश कराकर भविष्य में समाधान की उम्मीद भी जगाती है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

7. (क) 'आषाढ़ का एक दिन' के आधार पर मोहन राकेश की रंग-दृष्टि पर विचार करें। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) दलित-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' का अनुशीलन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास में मारिश के नारी-संबंधी दृष्टिकोण का उद्घाटन करते हुए बताइये कि क्या यह यशपाल के नारी-संबंधी दृष्टिकोण का भी प्रतिनिधित्व करता है? 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

8. (क) गुलाबराय के निबंध 'भारतीय संस्कृति' के प्रतिपाद्य का उद्घाटन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'शुक्लजी गंभीर प्रकृति के मननशील व्यक्ति थे किन्तु निबंधों में स्थान-स्थान पर हास्य, व्यंग्य तथा विनोद की चुटकियाँ लेकर विषय को रंजक बनाया है।' विवेचन कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'धर्मवीर भारती की कहानी 'गुलकी बन्नो' भारतीय समाज में नारी की दयनीय स्थिति का यथार्थपूर्ण और तल्ख चित्रण करती है।' विवेचन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

**Space for Rough Work**